पद्य खंड

1 साखी

-कबीर

पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तरों में से सही विकल्प छाँटिए—

1

ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै, औरन कौं सुख होइ॥
कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।
ऐसैं घटि-घटि राँम है, दुनियाँ देखै नाँहि॥

प्रश्न

(i) 'मन का आपा खोई' में 'आपा' शब्द का अर्थ है—
(क) अपना (ख) धन (ग) अहंकार (घ) मैल

(ii) मीठी वाणी बोलने से किसे सुख मिलता है?
(क) बोलने वाले को (ख) सुनने वाले को
(ग) दोनों को (घ) किसी को नहीं

(iii) कस्तूरी कहाँ बसती है?
(क) वन में (ख) हृदय में
(ग) हिरन की नाभि में (घ) हिरन के कंठ में

(iv) हमें ईश्वर को कहाँ खोजना चाहिए?
(क) वन में (ख) आकाश में (ग) जल में (घ) अपने हृदय में

2

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि॥
सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रोवै॥

प्रश्न

(i) 'जब मैं था' में 'मैं' का अर्थ है—
(क) अनुभव (ख) अहंकार (ग) मनुष्य (घ) अपना

(ii) ज्ञान का दीपक जलने पर क्या मिट जाता है?
(क) शत्रु (ख) अँधेरा (ग) अज्ञान (घ) विष

(iii) 'सोना' और 'जागना' प्रतीक हैं—
(क) 'रोने' और 'हँसने' के (ख) 'स्वार्थी' और 'परमार्थी' के
(ग) 'बैठने' और 'दौड़ने' के (घ) 'अमीर' और 'गरीब' के

(iv) किन लोगों को सुखी बताया गया है?
(क) स्वार्थी (ख) परमार्थी (ग) सच्चे (घ) धनी

3

बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।
राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ॥
निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ॥

प्रश्न

(i) 'भुवंगम' का अर्थ है—
(क) भारी (ख) साँप (ग) अँधेरा (घ) वनवास

(ii) ईश्वर के वियोग में मनुष्य कैसा जीवन जीता है?
(क) बेचैन (ख) निश्चिंत (ग) सुखी (घ) अद्‌भुत

(iii) निंदक को कहाँ रखना चाहिए?
(क) दूर (ख) पास (ग) वन में (घ) उपवन में

(iv) निंदक किस प्रकार हमारी सहायता करता है?
(क) धनवान बनाता है (ख) रोग दूर करता है
(ग) उन्नति दिलाता है (घ) दोष बताता है

4

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ॥
हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि॥

प्रश्न

(i) 'पंडित' का अर्थ है—
(क) पुजारी (ख) अध्यापक (ग) सच्चा ज्ञानी (घ) मित्र

(ii) सच्चा ज्ञानी किसे कहा गया है?
(क) पुस्तकें पढ़ने वाले को (ख) पीड़ा जानने वाले को
(ग) लेखक को (घ) प्रेम का महत्व जानने वाले को

(iii) कवि किस घर को जलाने की बात कर रहा है?
(क) धन-दौलत रूपी घर को (ख) मोह-माया रूपी घर को
(ग) संसार रूपी घर को (घ) समाज रूपी घर को

(iv) कवि स्वार्थ भाव त्यागकर किस भाव को अपनाने की सीख दे रहा है?
(क) दूसरों के कल्याण का भाव (ख) अपने कल्याण का भाव
(ग) युद्‌ध का भाव (घ) विरोध का भाव